पाठ 30

G4D4JH

खान अब्दुल गफ्फार खँा

“मैं अभी भारत से लौटा हँू और वहाँ की एक बात ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। मैंने देखा कि पुरुष और स्त्रियाँ अपने देश और देशवासियों की सेवा करने को तत्पर हैं। अगर आप चाहते हैं कि आपका देश और आपके लोग समृद्ध हांे तो आप केवल अपने लिए जीना छोड़ दंे, आपको समाज के लिए जीना आरम्भ करना होगा।”

-खान अब्दुल गफ्फार खाँ वर्ष 1928 में सीमान्त प्रान्त की एक जनसभा के भाषण के अंश

बादशाह खान के नाम से प्रसिद्ध, खान अब्दुल गफ्फार खाँ के साथ भारत की आजादी के लिए किये गये संघर्ष एवं उसके बाद की सुनहरी यादें जुड़ी हैं। उनकी जिन्दगी सत्य, अहिंसा, त्याग, बलिदान, शान्ति, सादगी तथा प्रेम की जीती जागती मिसाल है। महात्मा गांद्दी के आदर्शों पर चलकर उन्होंने सम्पूर्ण देशवासियों का दिल जीत लिया। 1947 ई0 के पूर्व भारत की उत्तर-पश्चिम सीमा अफगानिस्तान के कान्धार प्रान्त से मिलती थी और उस भारतीय क्षेत्र को सीमा प्रान्त कहा जाता था। बादशाह खान का जन्म स्थान, कार्य क्षेत्र तथा सामाजिक गतिविधियाँ सीमा प्रान्त से ही सम्बन्द्दित थीं। इस कारण इन्हें सीमान्त गांधी कहा जाता है।

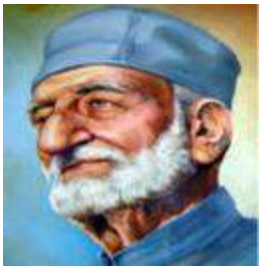

बादशाह खान का पालन-पोषण ऐसे परिवार में हुआ जिसमें जीवन का मुख्य उद्देश्य मानव-सेवा तथा भाई-चारा था। इसलिए मानव-प्रेम तथा कर्तव्य की भावना, बादशाह खान के मन में बचपन से ही गहरी बैठ गई थी। जब बादशाह खान पाँच वर्ष के थे, उनके माता-पिता ने उन्हें पढ़ने के लिए स्थानीय मदरसा में भेजा। धीरे-धीरे उन्होंने पूरा कुरान कण्ठस्थ कर लिया और हाफिजे कुरान बन गए। मदरसे की शिक्षा के बाद वे पेशावर में म्युनिसिपल बोर्ड हाईस्कूल में भर्ती हुए। फिर वे एडवर्ड्स मेमोरियल मिशन हाईस्कूल में गए ।

पेशावर में अंग्रेज अफसरों के नेतृत्व में अंग्रेजी सैन्य दस्ता था। बादशाह खान का नौकर बरनी काका, उन्हें ब्रिटिश फौज के बारे में कहानियाँ सुनाया करता और सैनिकांे की रोमांचक घटनाओं से उनका दिल बहलाता था। एक दिन सेना में सीधी नियुक्ति पाने के लिए उन्होंने ब्रिटिश भारतीय सेना के प्रधान सेनापति को अर्जी भेजी। उन्हें बुलाया गया और तुरन्त चुन लिया गया क्योंकि उनका कद छः फीट तीन इंच था और वे बलिष्ठ थे। बादशाह खान बहुत कम समय तक फौज में रहे। एक दिन उन्होंने अपने साथी अधिकारी को ब्रिटिश लेफ्टिनेंट द्वारा अपमानित होते हुए देखा तो उन्हें आत्मग्लानि हुई और वे सेना की नौकरी छोड़कर घर चले आए।

इसके बाद बादशाह खान अध्ययन के लिए अलीगढ़ चले गए। वहाँ मौलाना अबुल कलाम आजाद के अखबार अल-हिलाल को वे नियमित रूप से पढ़ने लगे। यह अखबार स्वतन्त्रता, प्रजातन्त्र व न्याय के प्रचार के लिए विख्यात था। इससे उनमें देश भक्ति की भावना और सुदृढ़ हुई।

खान अब्दुल गफ्फार खाँ की मित्रता विभिन्न राजनीतिक एवं सामाजिक संगठनों के नेताओं से थी जो आजादी की प्राप्ति के लिए सक्रिय थे। इन गतिविधियों में लगे रहने के कारण पेशावर में उन्हें गिरफ्तार किया गया। जेल में उन्हंें कठोर यातना दी गयी। इसका परिणाम यह हुआ कि उनका संघर्ष करने का संकल्प और दृढ़ हो गया। उनके अदम्य साहस और धैर्य का अभूतपूर्व प्रभाव अन्य साथी कैदियों पर भी पड़ा। जिस समय खान अब्दुल गफ्फार खाँ जेल में थे उनकी माँ की मृत्यु हो गयी। जेल से छूटकर वे सीद्दे अपने गाँव गए। गाँव के सभी लोगों ने अब्दुल गफ्फार खाँ का स्वागत किया। एक बड़ी जनसभा में लोगों ने उन्हें ‘‘फख्र ए अफगान’’ (पठानों का गौरव) की उपाधि से सम्मानित किया।

पठानों को जाग्रत करने के लिए उन्होंने मई 1928 ई0 में पश्तो भाषा का एक समाचार पत्र ‘पख्तून’ निकाला। कुछ ही दिनों में अंग्रेजों ने इस समाचार पत्र के प्रसार पर रोक लगा दी। 1928 ई0 में लखनऊ में कांग्रेस की सभा में वे महात्मा गांधी तथा जवाहर लाल नेहरू से मिले । बादशाह खान की जवाहर लाल नेहरू से अफगानिस्तान एवं पख्तूनों की मूल समस्याओं के विषय में लम्बी बातचीत हुई। उन्हें महसूस हुआ कि भारत के स्वतन्त्रता सेनानियों के साथ जुड़े रहने में पख्तूनों की भलाई है। उनको विश्वास हो गया कि अहिंसा तथा एकता से विजय प्राप्त की जा सकती है।

सन् 1929 ई0 में बादशाह खान ने एक इतिहास प्रसिद्ध संगठन बनाया जिसका नाम ‘‘खुदाई खिदमतगार’ था। इसके सदस्य प्रतिज्ञा करते थे कि हर अत्याचार का विरोध अहिंसा और सत्याग्रह से करेंगे। कुछ ही दिनों के भीतर ‘खुदाई खिदमतगार’ आन्दोलन के सदस्य लाल कुर्ती वाले के नाम से प्रसिद्ध हो गये। ‘सविनय अवज्ञा आन्दोलन’ को चलाने के लिए वे पेशावर के नाकी थाना पहुँचे तो गिरफ्तार कर लिए गये। 13 मई 1930 ई0 को सेना की एक टुकड़ी ने उतमानजई गाँव को चारों ओर से घेर लिया और लाल कुर्ती वालों

को गिरफ्तार कर उन्हें लाल कपड़े उतारने का हुक्म दिया, लेकिन 'प्राण रहते नहीं उतारूँगा' कहने पर बन्दूक के कुन्दों से मार-मार कर उन्हें बेहोश कर दिया गया। कुछ को उनके घरों की ऊपरी मंजिल से नीचे फेंक दिया गया।

सन् 1931 ई0 में अंग्रेजों ने बादशाह खान को फिर गिरफ्तार कर लिया। पख्तून लोगों के विरुद्ध सरकारी दमन चक्र जारी रहा। इसके बावजूद खुदाई खिदमतगार आंदोलन शान्तिपूर्ण ढ़ंग से चलता रहा। तीन वर्ष की कैद के बाद बादशाह खान को छोड़ दिया गया लेकिन उन्हें सीमान्त प्रान्त और पंजाब जाने की इजाजत नहीं मिली। बादशाह खान उत्तरी भारत में रहकर बिहार की यात्रा पर गए जहाँ उन्होंने राजेन्द्र प्रसाद व अग्रणी कांग्रेसी स्वतन्त्रता सेनानियों से भेंट की। बाद में वे वर्धा गए और गांधी जी के साथ सेवाग्राम में रहे।

सन् 1934 के कांग्रेस के मुम्बई अधिवेशन में बादशाह खान से अध्यक्षता करने की पेशकश की गई किन्तु उन्हांेने नम्रता पूर्वक इसे अस्वीकार करते हुए कहा कि वे एक साधारण सिपाही हैं और खुदाई खिदमतगार है।

अगस्त 1942 ई 0 में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' प्रारम्भ हुआ। सीमान्त प्रान्त मंे यह आन्दोलन बड़े अनुशासित रूप में किया गया। द्वितीय विश्वयुद्ध (1939-1945) के पश्चात 1945-46 में प्रान्तीय असेम्बलियों के चुनाव हुए। मुस्लिम बाहुल्य सीमान्त पं्रात में मुस्लिम लीग पराजित हो गईं। खुदाई खिदमतगार चुनाव जीत गए। इसके बाद की राजनैतिक घटनाएँ तेजी से बदलीं। भारत विभाजन की हवा चल पड़ी। कांग्रेस और मुस्लिम लीग दो विपरीत ध्रुव हो गए। अंग्रेजांे की साजिश के तहत कराये गए जनमत संग्रह के आधार पर उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रान्त (एन डब्लू एफ पी) को पाकिस्तान का हिस्सा बना दिया। भारत विभाजन से बादशाह खान बहुत दुखी हुए और उन्हें मर्मान्तक पीड़ा हुई।

स्वतन्त्रता के ठीक बाद पाकिस्तान सरकार ने उनको गिरफ्तार कर लिया। सन् 1962 ई0 में मानवाधिकार से सम्बन्धित संस्था 'एमनेस्टी इंटरनेशनल' ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि बादशह खान 1948 से ही लगभग निरन्तर जेल में रहे।

सन् 1964 ई0 में पाकिस्तान की सरकार ने बादशाह खान को इलाज के लिए लन्दन जाने की अनुमति दी। जहाँ से वे अफगानिस्तान चले गए और 1972 तक स्वनिर्वासित जीवन बिताया। इसी बीच 1969 ई0 में महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी पर वे भारत आए। उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए जवाहर लाल नेहरू पुरस्कार दिया गया। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के निमन्त्रण पर वे पुनः 1980 तथा 1981 में भारत आए। उनके साहस, प्रेम और मानव सेवा को दृष्टिगत रखते हुए सन् 1987 में भारत सरकार ने बादशाह खान को सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' प्रदान किया। 20 जनवरी 1988 ई0 को 98 वर्ष की परिपक्व आयु में यह प्रकाशपुंज बुझ गया। भारत के स्वतन्त्रता

सेनानियों का प्रतिनिधि मंडल उनके अन्तिम संस्कार स्थल जलालाबाद अफगानिस्तान गया और दुखी व कृतज्ञ राष्ट्र (भारत) की ओर से उन्हें अन्तिम श्रद्धा॰जलि दी।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए -

(क) बादशाह खान को सीमान्त गांधी क्यों कहा जाता है ?

(ख) 'हाफिजे कुरान' का क्या अर्थ है ?

(ग) खुदाई खिदमतगार के सदस्य क्या प्रतिज्ञा करते थे ?

(घ) गफ्फार खाँ को सर्वोच्च भारतीय नागरिक सम्मान कब मिला ?

2. निम्नलिखित में सही कथन के सम्मुख सही (√) तथा गलत कथन के सम्मुख गलत (ग्) का चिन्ह बनाइए।

(क) खान अब्दुल गफ्फार खाँ के विचारों पर परिवार के लोगांे का प्रभाव पड़ा।

(ख) गफ्फार खाँॅ अंग्रेजी सेना की नौकरी से निकाल दिए गए थे।

(ग) 'पख्तून' नामक समाचार पत्र अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित होता था।

(घ) 'अलहिलाल' समाचार पत्र स्वतंत्रता, प्रजातंत्र व न्याय के प्रचार के लिये विख्यात था।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के चार सम्भावित उत्तर हैं जिनमें से केवल एक उत्तर सही है। सही उत्तर छाँटिए-

(क) गफ्फार खाँॅ ने मैट्रिक परीक्षा के लिए प्रवेश लिया -

(प) म्युनिसिपल बोर्ड हाईस्कूल में।

(पप) हडवर्ड्स मेमोरियल मिशन हाईस्कूल में।

(पपप) सेंट स्टीफेंस कालेज में ।

(पअ) मदरसा नदवतुल उलेमा लखनऊ में।

(ख) गफ्फार खाँ एक महान नेता की जन्मशताब्दी वर्ष पर भारत आए थे। वे नेता थे -

(1) लाला लाजपत राय (2) श्रीमती इन्दिरा गांधी

(3) डा0 राधाकृष्णन (4) महात्मा गांधी

4. अपने विद्यालय के पुस्तकालय से खान अब्दुल गफ्फार खाँ के जीवन चरित्र पर आधारित एक पुस्तक प्राप्त कीजिए तथा खुदाई खिदमतगार एवं लालकुर्ती के विषय में बीस पंक्तियों का लेख तैयार कीजिए।